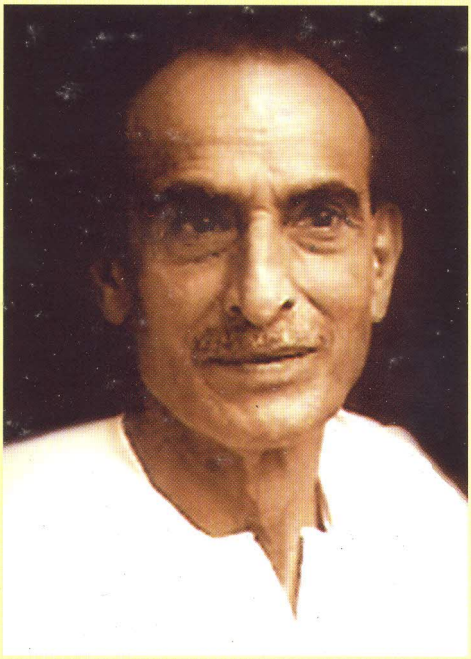

आचार्य जे.बी. कृपलानी

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

आचार्य जे.बी. कृपलानी

आचार्य कृपलानी के नाम से विख्यात आचार्य जीवंतराम भगवानदास कृपलानी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और हमारे राष्ट्रीय जीवन के एक महान व्यक्ति थे। वे अपने अदम्य साहस और कुशाग्र बुद्धि के कारण राष्ट्र के प्रिय बन गए। विदेशी शासन के बंधन से भारत को मुक्त कराने के लिए अपने नि:स्वार्थ समर्पण और दृढ़ निश्चय के कारण वे हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के शिखर पुरुष बन गए। आचार्य कृपलानी एक गांधीवादी, संसदविद्, शिक्षाविद्, सामाजिक न्याय के लिए लड़ने वाले एक बहु-आयामी व्यक्तित्व के धनी थे और सबसे बड़ी बात यह कि वे मूल्यों पर आधारित राजनीति के समर्थक थे। वे संसद के अंदर और बाहर एक प्रगतिशील और समृद्ध समाज के निर्माण के लिए अपने जुझारू व्यक्तित्व के लिए भी जाने जाते थे।

श्री जे.बी. कृपलानी का जन्म 11 नवम्बर, 1888 को हैदराबाद में हुआ था जो अब पाकिस्तान के सिंध में है। उन्होंने अपनी प्रारंभिक स्कूली शिक्षा सिंध में प्राप्त की। मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद श्री कृपलानी ने उच्च शिक्षा के लिए विल्सन कालेज, बाम्बे में दाखिला लिया। तत्पश्चात्, वे डी.जे. सिंध कालेज, कराची चले गए तथा इसके बाद फरग्यूसन कालेज, पुणे आ गए जहां से उन्होंने 1908 में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। श्री कृपलानी ने बाम्बे विश्वविद्यालय से इतिहास और अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की।

कृपलानी जी विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान भी स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। वे गांधीवादी विचारधारा के मुखर प्रतिपादक थे तथा गांधीवाद तथा गांधी जी की देश की आजादी के प्रति गहरी प्रतिबद्धता से बहुत प्रभावित थे। गांधी जी ने जब नील की खेती करने वाले लोगों की दयनीय स्थिति को स्वयं अनुभव करके चंपारण, बिहार से अपनी राजनीतिक यात्रा आरंभ की तो अन्य लोगों के साथ आचार्य कृपलानी जी उनके साथ रहे और वहां के किसानों की समस्याओं की जानकारी प्राप्त की। बाद में, अपनी राजनीतिक यात्रा के दौरान जब महात्मा गांधी ने अहमदाबाद मिल हड़ताल तथा

खेड़ा हड़ताल की और नमक सत्याग्रह चलाया, तब भी कृपलानी जी उनके साथ रहे। 1917 में, आचार्य कृपलानी ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहे स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए अपनी नौकरी छोड़ दी। बाद के वर्षों में, कृपलानी जी राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में अग्रणी रहे।

बीसवें दशक के अंत से, कृपलानी जी ने स्वयं को कांग्रेस पार्टी के काम में पूर्णत: समर्पित कर दिया। वे संगठन में तेजी से उभरे तथा 1934 से 1945 तक उन्होंने पार्टी के महासचिव के रूप में कार्य किया। उन्होंने 1921 से कांग्रेस के सभी आंदोलनों में भाग लिया और वे विभिन्न अवसरों पर जेल भी गए। आचार्य कृपलानी नवम्बर, 1946 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए और उन्होंने सत्ता हस्तांतरण के नाजुक दौर में संगठन को कुशलता से चलाया। कृपलानी ने कांग्रेस पार्टी से 1951 में त्यागपत्र दे दिया और कृषक मजदूर प्रजा पार्टी नामक एक नई राजनीतिक पार्टी का गठन किया जिसका बाद में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी में विलय हो गया। लेकिन 1954 में उन्होंने प्रजा सोशलिस्ट पार्टी से त्यागपत्र दे दिया और अपने शेष राजनीतिक जीवन में निर्दलीय बने रहे।

स्वतंत्र भारत के निर्माण के प्रारंभिक वर्षों में आचार्य कृपलानी के समृद्ध और बहुमुखी अनुभव से राष्ट्र अत्यंत लाभान्वित हुआ। वह संविधान सभा के सदस्य थे और उन्हें अत्यधिक महत्वपूर्ण मूल अधिकारों संबंधी उप-समिति के सभापति का दायित्व सौंपा गया।

बाद के वर्षों में, आचार्य कृपलानी चार बार लोक सभा के सदस्य रहे। वह 1952 और 1957 के आम चुनावों में बिहार के क्रमश: भागलपुर और सीतामढ़ी से और 1962 में उत्तर प्रदेश के अमरोहा तथा 1967 में मध्य प्रदेश के गुना से निर्वाचित हुए। अपने लंबे और गौरवपूर्ण संसदीय जीवन में उन्होंने स्वतंत्र वाद-विवाद और चर्चा के उच्च आदर्श स्थापित किए तथा संसदीय आचार और मूल्यों को बनाए रखा। लोकतंत्र के प्रबल और मुखर समर्थक के रूप में उनका विश्वास था कि रचनात्मक विपक्ष का होना लोकतंत्र की सफलता की एक पूर्व शर्त है। कृपलानी का यह मानना था कि यदि सत्ता पर रोक नहीं लगायी गयी तो वह निरकुंश हो जाती है और विपक्षी दल इस अवांछित प्रवृत्ति पर रोक लगाते हैं। उन्होंने लोकतांत्रिक मूल्यों को समृद्ध बनाने का प्रयास किया और वे देश और आम जनता, के हितों

के लिए लगातार संघर्ष करते रहे जिसके प्रति उनका अगाध प्रेम था। यह आचार्य कृपलानी के नि:स्वार्थपरता का ही प्रमाण है कि उन्होंने अपने लंबे संसदीय जीवन में कभी भी कोई सरकारी पद स्वीकार नहीं किया।

बहु-आयामी व्यक्तित्व के धनी आचार्य कृपलानी को शिक्षा से बेहद लगाव था। उन्हें वर्ष 1919 में प्रतिष्ठित बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय के राजनीतिशास्त्र विभाग में प्रोफेसर नियुक्त किया गया और वे 1920 तक उस पद पर रहे। आचार्य कृपलानी ने महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए गुजरात विद्यापीठ की आचार्य (प्रिंसीपल) के रूप में सेवा की तथा उसका मार्गदर्शन किया। गुजरात विद्यापीठ में उनके कार्यकाल के दौरान ही उन्हें आचार्य कहा जाने लगा। उन्होंने सन् 1927 तक इस संस्थान की सेवा की और छात्रों को देश की सेवा करने और देश के अशिक्षित और वंचित लोगों तक शिक्षा का प्रकाश पहुंचाने के लिए तैयार करने हेतु मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रदान करने में उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके बाद, वर्ष 1927 से शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने और गांधीवादी ढंग से रचनात्मक कार्य करने के लिए श्री गांधी आश्रम के कार्य में पूरी तन्मयता के साथ लग गए।

सामाजिक रूप से संवेदनशील नेता, आचार्य कृपलानी ने महसूस किया कि आर्थिक विकास की किसी भी प्रक्रिया का तब तक कोई अर्थ नहीं रह जाता जब तक कि उसमें ग्रामवासियों और गांवों के विकास का समावेश नहीं किया जाता। उन्होंने भारत के लोगों के लिए लाभप्रद रोजगार और सामाजिक सुरक्षा की वकालत की। गांधीजी की तरह उन्होंने भी विकेंद्रित औद्योगिकीकरण, जिससे लोगों की प्राथमिक जरूरतें पूरी हो सकें, के विचार का समर्थन किया। कृपलानी जी का मत था कि बेरोजगारी देश में एक बहुत बड़ी समस्या है और गरीबी के अभिशाप को दूर करने के लिए किए जा रहे प्रयासों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उनका मानना था कि अत्यधिक निवेश वाले बड़े और केन्द्रीकृत उद्योगों, जिनमें उत्पादन के लिए अधिक मानव श्रम की अपेक्षा नहीं होती है, की तुलना में छोटे और कुटीर उद्योग हमारे समाज के अधिकांश तबके को रोजगार उपलब्ध करा सकते हैं। उनका विचार था कि प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय में थोड़ी-सी वृद्धि से यह समस्या सुलझने वाली नहीं है। उनके मत में पददलितों के लिए

आर्थिक क्षमता को सतत रूप से बनाया जाना आवश्यक था। औद्योगिकीकरण के विकेंद्रीयकरण के प्रबल पक्षधर आचार्य जी का मानना था कि इससे विभिन्न क्षेत्रों और राज्यों में असमान औद्योगिकीकरण की समस्या से निजात पायी जा सकती है।

स्वतंत्रता संग्राम, समाज निर्माण और समाज सेवा के कार्यों के प्रति पूर्णतया समर्पित होने के बावजूद आचार्य कृपलानी लिखने और पढ़ने के लिए समय निकाल ही लेते थे। उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं और ''माई टाइम्स'' नाम से अपनी जीवनी भी लिखी। इस बीच उन्होंने ''विजिल'' नामक एक साप्ताहिक भी निकाला।

प्रतिबद्धता और ईमानदारी की प्रतिमूर्ति आचार्य कृपलानी का 19 मार्च, 1982 को अहमदाबाद में देहावसान हुआ। आचार्य कृपलानी को भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री एन. संजीव रेड्डी ने कहा था ''आचार्य जे.बी. कृपलानी की मृत्यु से राष्ट्र ने गांधीयुग के एक मसीहा को खो दिया है....। उन्होंने कभी भी पद और सत्ता की लालसा नहीं की। वह हमेशा सार्वजनिक जीवन में शुचिता की वकालत करते रहे। गांधीवाद की भावना से ओतप्रोत होकर वे साठ वर्षों तक राष्ट्र की निःस्वार्थ सेवा करते रहे।'' तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने कहा था, ''अपने दीर्घ सार्वजनिक जीवन में उन्होंने कई उल्लेखनीय कार्य किए लेकिन आचार्य कृपलानी जी को दृढ़ता से अपने विचारों को प्रकट करने के लिए हमेशा याद रखा जाएगा। वह सत्याग्रहकाल का एक सम्पर्क सूत्र थे.... राष्ट्र के साथ-साथ मैं भी इस महान विभूति को भावभीनी श्रद्धांजलि देती हूं।''

[श्री सुमानव द्वारा बनाए आचार्य जे.बी. कृपलानी के चित्र का भारत के उपराष्ट्रपति और राज्य सभा के सभापति श्री भैरों सिंह शेखावत द्वारा अनावरण किया जाएगा। इस चित्र को गांधी आश्रम और आचार्य कृपलानी मेमोरियल ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा भेंट किया गया है।]